

जनपद बुलंदशहर की कामकाजी तथा गैर-कामकाजी महिलाओं के बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य तथा सामाजिक चुनौतियाँ का एक विवरणात्मक अध्ययन

¹Chandramukhi, ²Dr. Yatendra Pal

¹(Research Scholar)

²Associate Professor (Supervisor)

Institute of Education and Research Manglayatan University, Beswan, Aligarh

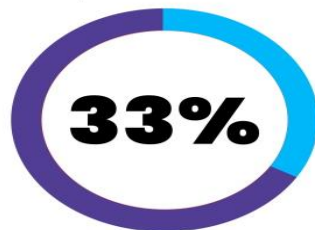
सारांश, कामकाजी महिला को अपने परिवार, आफिस की देखभाल करने में महिलाओं के सामने आज आने वाली वित्तीय चुनौतियाँ बहुआयामी हैं। किसी प्रियजन की देखभाल करने में अक्सर अतिरिक्त खर्चे भी शामिल होते हैं, जैसे कि चिकित्सा बिल, दवाइयाँ और घर में बदलाव। साथ ही, देखभाल करने की जिम्मेदारियों से आय में कमी आ सकती है, जिससे देखभाल करने वाले पर वित्तीय तनाव पैदा हो सकता है। हाल के वर्षों में शिक्षा के प्रसार पहचान की खोज और तकनीकी परिवर्तनों की शुरुआत के कारण भी भारत में बड़ी संख्या में महिलाएं नौकरी के बाजार में प्रवेश कर रही हैं, हमारे देश की स्वतंत्रता के बाद की अवधि में महिलाओं की शिक्षा में तेजी से विस्तार ने उनके रोजगार में सुधार किया है, आज कोई भी ऐसा पेशा नहीं है जिसमें महिलाओं ने प्रवेश ना किया हो विगत वर्षों से यह देखने में भी आ रहा है कि महिलाओं में शिक्षा के अधिक प्रसार के साथ-साथ महिलाओं द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने तथा लगभग सभी प्रकार की नौकरियों में आने की प्रवृत्ति तेजी से बढ़ती जा रही है महिलाओं के कार्यरत रहने से उनके पास समय का अभाव हो गया है महिला अपने बच्चों की शिक्षा एवं पालन पोषण पर पर्याप्त समय व ध्यान नहीं दे पाती हैं। गैर कामकाजी महिलाएं अपने बच्चों की पढ़ाई पर ध्यान तो देती हैं, लेकिन वे कामकाजी महिलाओं की तरह अपने बच्चों को पर्याप्त सुविधाएं उपलब्ध नहीं करा पाती हैं, क्योंकि उनकी आर्थिक स्थिति कामकाजी महिलाओं की अपेक्षा न्यून होती है, दूसरी ओर कामकाजी महिलाएं चूंकि खुद पढ़ी लिखी होती हैं इसलिए अनुभव भी अधिक होता है जिसका लाभ उनके बच्चों को मिलता है जबकि गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों को यह सुविधा नहीं मिल पाती है।

मुख्य शब्द, कामकाजी महिला, बच्चों की शिक्षा, वं पालन पोषण, रोजगार आदि।

परिचय, महिलाएं अब पारिवारिक आय के सर्जक के रूप में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, चाहे घरेलू खेतों या व्यवसायों में या वेतन भोगी कर्मचारी के रूप में। विशेष रूप से विकासशील देशों में इस तरह का काम परिवार के अस्तित्व के लिए आवश्यक होने की संभावना बनी रहती है। वर्तमान युग में महिलाओं की स्थिति बहुत कठिन है। उन्हें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, उन्हें और अधिक दिशाओं में मोड़ दिया जाता है, कुछ महिलाएं अपना करियर बनाने के लिए अपना सारा प्रयास लगा देती हैं लेकिन अन्य अपने बच्चों के स्कूल जाने की उम्र तक इंतजार करती हैं माताएं अपने बच्चों को जन्म से ही प्यार स्नेह और देखभाल करती हैं। अब दुनिया के अधिकांश देशों में बच्चों की देखभाल एक बड़ा मुद्दा बन गया है। यह सार्वभौमिक सत्य भी है कि बच्चों को मां के प्यार की सबसे अधिक आवश्यकता होती है। एक मां के लिए घर से बाहर काम करने और बच्चों के साथ घर पर रहने के बीच चयन करना बहुत कठिन निर्णय होता है। अतः एक कार्यशील महिला एक दोहरी जिम्मेदारी का निर्वहन करते हुए समाज में एक आदर्श स्थापित करती है। कुछ उपलब्धि और संतुष्टि की भावना के साथ एक कामकाजी महिला अपने बच्चों के लिए एक अच्छे रोलमॉडल के रूप में काम कर सकती है बच्चे को अपने सपनों और महत्वाकांक्षाओं को आगे बढ़ाने के लिए भी प्रेरित कर सकती हैं।

Women in leadership

In 2022, the global share of women in senior leadership across public and private sectors is



In the private sector alone, women represent 31% of leaders globally.

This industries with the highest percentage of female leadership are:



This industries with the lowest percentage of female leadership are:



चित्र संख्या 1.1

आजकल कार्यस्थल पर महिलाओं को जिन कुछ प्रमुख समस्याओं का सामना करना पड़ता है, वे इस प्रकार हैं। लिंग पूर्वाग्रह और रुढ़िवादिता, जैसे अध्ययनों से पता चला है कि लैंगिक पूर्वाग्रह और रुढ़िवादिता के कारण कार्यस्थल पर महिलाओं के लिए कई तरह के नकारात्मक परिणाम सामने आ सकते हैं, जिनमें कम वेतन, उन्नति के कम अवसर और उनके योगदान के लिए मान्यता की कमी शामिल है। एक अध्ययन में यह भी पाया गया कि जब पुरुष कार्यस्थल पर अपनी बात कहते हैं और खुद को मुखर करते हैं तो उन्हें अक्सर स्टार के रूप में देखा जाता है, जबकि महिलाओं को ऐसा ही व्यवहार करने के लिए बॉस या धक्का देने वाली के रूप में देखा जाता है। इसी तरह, जो महिलाएं उच्च वेतन या बेहतर लाभ के लिए बातचीत करती हैं, उन्हें अक्सर आक्रामक या अप्रिय होने के लिए दंडित किया जाता है। इसी लिए आज इन पूर्वाग्रहों और महिलाओं के करियर पर उनके विपरीत प्रभाव के बारे में जागरूकता बढ़ाना अत्यन्त ही जरूरी है। प्रशिक्षण कार्यक्रम और कार्यशालाएँ कर्मचारियों और प्रबंधकों को उनके पूर्वाग्रहों को पहचानने और उन्हें चुनौती देने तथा अधिक समावेशी कार्यस्थल संस्कृति बनाने में मदद कर सकती हैं। एक अन्य रणनीति वस्तुनिष्ठ नियुक्ति और पदोन्नति प्रथाओं को लागू करना है जो लिंग की व्यक्तिपरक धारणाओं के बजाय योग्यता और अनुभव पर ध्यान केंद्रित करती हैं। इसके अतिरिक्त, कंपनियाँ अधिक विविधतापूर्ण और समावेशी कार्यबल बनाने के लिए काम कर सकती हैं, जो रुढ़िवादिता को तोड़ने और पूर्वाग्रह को कम करने में मदद कर सकती हैं।

कार्यशील महिलाओं के बच्चों के व्यक्तित्व पर पड़ने वाला प्रभाव



चित्र संख्या 1.2

कामकाजी महिलाएं आमतौर पर अपने परिवार की जरूरतों को प्राथमिकता देती हैं, अपनी जरूरतों एवं आवश्यकताओं को नजरअंदाज करती हैं चूँकि बच्चों के शुरुआती 5 साल उनके लिए बेहद अहम रहते हैं बच्चों का बौद्धिक भावपूर्ण विकास एवं समाजीकरण का यह अहम समय होता है अपने बच्चों व परिवार को पर्याप्त समय ना दे पाना यह एक कामकाजी महिला के लिए एक गम्भीर समस्या है। कामकाजी मां का समाज निर्माण एवं अन्वेषण में एक अतुल्य योगदान है। कामकाजी माताएं बच्चों में आत्मविश्वास, सामाजिक जागरूकता और प्रतिबद्धता व संघर्ष की भावना पैदा करती हैं और उन्हें बहुत सारे आर्थिक लाभ भी मिलते हैं, कुछ उपलब्धि और संतुष्टि को भावना के साथ एक कामकाजी मां अपने बच्चों के लिए एक अच्छे रोलमॉडल के रूप में काम कर सकती है और उन्हें अपने सपनों और महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने के लिए प्रेरित भी कर सकती हैं। महिलाएं परिवार में कई भूमिकाएं निभाती हैं जो परिवार के सभी सदस्यों के स्वास्थ्य और खुशहाली को प्रभावित करती हैं। दुनिया भर के प्रत्येक समाज में महिलाएं रीति रिवाज के अनुसार शिशुओं और बच्चों की प्राथमिक देखभाल करने वाली आया भी नियुक्त की जाती है।

शोध पूर्व सहित्यक अवलोकन

मोनिका, एट. अल. (2023), शोधार्थिनी ने इस शोध के निष्कर्ष के रूप में पाया है, कि हर किसी का सबसे बड़ा वांछित उद्देश्य खुशी और सकारात्मक कल्याण की भावना है। प्रत्येक परिवार संतुष्ट, स्वस्थ और सफल लोगों को पालने की आकांक्षा रखता है। वर्तमान अध्ययन का लक्ष्य यह निर्धारित करना है कि विभिन्न पर्यावरणीय और व्यक्तिगत कारक, जैसे सहकर्मी दबाव, माता-पिता-किशोर रिश्ते, भावनात्मक परिपक्वता और लचीलापन, कामकाजी माताओं के साथ और उनके बिना किशोरों के मनोवैज्ञानिक कल्याण की भविष्यवाणी कैसे कर सकते हैं। इसका उद्देश्य यह निर्धारित करना भी है कि कामकाजी माताओं वाले और बिना कामकाजी माताओं वाले किशोरों के बीच ये चर कैसे भिन्न हैं।

सिद्धार्थी, ए.जी. (2023), शोधार्थिनी ने इस शोध के निष्कर्ष के रूप में पाया है, कि महिलाएं एक आत्मा...कई भूमिकाएँ के समान हैं। वे हर किसी के जीवन में कई तरह की भूमिकाएँ निभाती हैं, लेकिन जब वे माँ बन जाती हैं, तो उनकी अन्य पहचान पीछे छूटने लगती हैं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि उनकी अन्य जिम्मेदारियाँ खत्म हो जाती हैं। भारत में, महिलाएं अपने बच्चों के पालन-पोषण के लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार हैं, भले ही वे काम करना जारी रखना चाहें या नहीं। रात का खाना पकाना, सफाई करना, और काम-काज चलाना जैसे कार्यों की कभी न खत्म होने वाली सूची के अलावा, प्रत्येक बच्चे का जन्म अक्सर बड़ी बाधाएँ प्रस्तुत करता है।

ऐरी, पी, जैन, डी. (2022), शोधार्थिनी ने इस शोध के निष्कर्ष के रूप में पाया है, कि प्री.स्कूलों के वैचारिक कौशल पर माताओं की रोजगार स्थिति का प्रभाव बच्चों का सामाजिक कौशल और मानसिक स्वास्थ्य उनके व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। बच्चों के मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य में आत्मसम्मान, तनाव सहने की क्षमता, भावनात्मक संतुलन और मनोविकार शामिल हैं। बच्चों को चुनौतियों का सामना करने, तनाव को संभालने और निर्णय लेने में सहायता देने वाली स्वस्थ मानसिकता होनी चाहिए।

शोध पत्र की शोध विधि

जनपद बुलंदशहर की कामकाजी तथा गैर-कामकाजी महिलाओं के बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य तथा सामाजिक कौशल का तुलनात्मक अध्ययन इस अध्ययन में कामकाजी तथा गैर-कामकाजी महिलाओं के बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक कौशल की तुलना करने के लिए एक **सर्वेक्षात्मक पद्धति (survey method)** अपनाई गई है। यह पद्धति विशेष रूप से विभिन्न समूहों के बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक कौशल के स्तरों को समझने और उनकी तुलना करने के लिए उपयुक्त ही रहती है।

जनसंख्या न्यादर्श

जनसंख्या इस शोध अध्ययन की जनसंख्या में वह बच्चे शामिल होंगे जो चयनित माध्यमिक स्कूलों में अध्ययनरत हैं, और जिनकी माताएं कामकाजी या गैर-कामकाजी हैं, ताकि बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक कौशल के महत्वपूर्ण विकास के चरणों का अध्ययन किया जा सके इन बच्चों की आयु 17 वर्ष तक ही होगी और इनकी कक्षाएँ 9 – 12 तक होगी आज जनपद बुलंदशहर की दो तहसील खुर्जा और डिबाई में कुल कामकाजी महिलाओं की संख्या लगभग 25155

है। जिनमें से शोधार्थिनी ने 10 प्रतिशत की दर से 250 कामकाजी माताओं को अपने शोध के लिये चयनित किया है, और आज जनपद बुलंदशहर की दो तहसील खुर्जा और डिबाई में कुल गैर कामकाजी माताओं के परिवारों की संख्या 25377 है, 2011 की जनगणना के अनुसार जिनमें से लगभग 10 प्रतिशत की दर से शोधार्थिनी ने कुल 250 माताओं के स्कूली बच्चों को अपने शोध के लिये चयनित किया है। जिनमें से 250 बच्चे कामकाजी माताओं के और 250 गैर-कामकाजी माताओं के रहें हैं। और गैर-कामकाजी महिलाओं में 125 संयुक्त परिवारों और 125 एकल परिवारों की महिलाओं को शोधार्थिनी द्वारा इस शोध अध्ययन में शामिल किया गया है। इस तरह कुल 500 ऐसी महिलाओं को इस शोध में शामिल किया गया है। जिनके बच्चों चयनित माध्यमिक स्कूलों में पड़ते हैं। इसका पूरा विवरण शोधार्थिनी ने विद्यालयों से एकत्रित किया है। सामान्यतया चयनित 1 माध्यमिक स्कूल में 80 बच्चों की संख्या निकलकर आती है जिनमें से 20 बच्चों जिनकी माताएँ कामकाजी या गैर-कामकाजी हैं, उनके एक एक बच्चे को इस शोध में सामिल किया जा रहा है, इस तरह से कुल 500 बच्चों को इस शोध में शामिल किया गया है। इन बच्चों को यादृच्छिक नमूना पद्धति से चुना गया है।

अनुसंधान पत्र के प्रश्न

- 1 किस प्रकार की मातृत्व भूमिका (कामकाजी या गैर-कामकाजी) बच्चों के आत्मविश्वास और आत्मसम्मान को अधिक प्रभावित करती है।
- 2 क्या कार्यरत माताओं के बच्चों में अधिक आत्मनिर्भरता और समस्याओं को हल करने की क्षमता आती है।

अनुसंधान पत्र के उद्देश्य

- 1 इस शोध अध्ययन को पूरा करने के लिए शोधार्थिनी द्वारा निम्नलिखित शोध अध्ययनों का निर्माण किया गया है, जो इस प्रकार हैं।
- 2 जनपद बुलंदशहर की कामकाजी महिलाओं के बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन करना।
- 3 जनपद बुलंदशहर की गैर-कामकाजी महिलाओं के बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन करना।

शोध प्रश्न / परिकल्पना

इस शोध अध्ययन को पूरा करने के लिए शोधार्थिनी द्वारा निम्नलिखित शोध प्रश्नों / शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है, जो इस प्रकार हैं।

- 1 कामकाजी महिलाओं के बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य में गैर-कामकाजी महिलाओं के बच्चों की अपेक्षा उल्लेखनीय अंतर होता है।
- 2 गैर-कामकाजी महिलाओं के बच्चों का मानसिक स्वास्थ्य अपेक्षाकृत अधिक संतुलित होता है।
- 3 कामकाजी महिलाओं के बच्चों के सामाजिक कौशल गैर-कामकाजी महिलाओं के बच्चों की तुलना में अधिक विकसित होते हैं।

समस्या कथन

जनपद बुलंदशहर की कामकाजी तथा गैर-कामकाजी महिलाओं के बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य तथा सामाजिक कौशल का तुलनात्मक अध्ययन

कामकाजी महिलाओं के प्रभाव की चुनौतियाँ,

- 1 पारिश्रमिक में असमानता समान काम के लिए महिलाओं को पुरुषों के मुकाबले कम वेतन मिलता है।
- 2 सीनियर पदों पर सीमित पहुँच का प्रभाव, जो महिलाओं को उच्च पदों तक पहुँचने से रोकता है।
- 3 सामाजिक दबाव और अपेक्षाएँ समाज में पारंपरिक सोच और मान्यताएँ कामकाजी महिलाओं के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न करती हैं।
- 4 पारंपरिक भूमिकाओं का दबाव महिलाएँ परिवार की देखभाल को प्राथमिकता देने के लिए बाध्य महसूस कर सकती हैं।

- 5 आलोचना और जजमेंट कामकाजी महिलाओं को अक्सर अच्छी माँ या अच्छी गृहिणी न होने के आरोप झेलने पड़ते हैं।
- 6 मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर प्रभाव दोहरी जिम्मेदारियों के कारण तनाव, थकावट, और मानसिक स्वास्थ्य समस्याएँ आम हो जाती हैं।
- 7 तनाव और चिंता कार्यस्थल के दबाव और पारिवारिक अपेक्षाओं के बीच सामंजस्य स्थापित करने का तनाव।
- 8 देखभाल संबंधी जिम्मेदारियों को प्रतिबंधित करने में सहायता करते हैं।

निष्कर्ष, महिलाओं को स्वीकार किए जाने या पदोन्नत किए जाने के लिए पारंपरिक लिंग भूमिकाओं या रूढ़ियों के अनुरूप होने का दबाव महसूस हो सकता है, जो उनके विकास और विकास के अवसरों को सीमित कर सकती है। इसके अतिरिक्त, अगर महिलाएं इन अपेक्षाओं से विचलित होती हैं, तो उन्हें प्रतिक्रिया या नकारात्मक परिणामों का सामना करना पड़ सकता है, जो एक शत्रुतापूर्ण या अप्रिय कार्य के लिए वातावरण बना सकती है। दोहरे मानकों और अपेक्षाओं को संबोधित करने के लिए, सरकार इस बारे में अधिक जागरूकता और समझ को बढ़ावा देने के लिए काम कर सकती है कि लिंग संबंधी रूढ़िवादिता और पूर्वाग्रह कार्यस्थल को कैसे प्रभावित कर सकते हैं। इसमें कर्मचारियों को प्रशिक्षण और शिक्षा प्रदान करना, साथ ही भेदभाव और पूर्वाग्रह को संबोधित करने के लिए स्पष्ट नीतियां और प्रक्रियाएं स्थापित करना शामिल हो सकता है। सरकार इस लचीलेपन की कमी, कार्यस्थल में लचीलेपन की कमी महिलाओं के लिए महत्वपूर्ण नकारात्मक परिणाम पैदा कर सकती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- [1] खान, एम. ए. (2012), कामकाजी और गैर-कामकाजी माताओं के बच्चों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता" खंड 4, अंक 4, पृष्ठ 24
- [2] किरण, यू.वी. (2012), स्कूल जाने वाले और गैर-स्कूल जाने वाले किशोरों के बीच व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन— एशियन जर्नल ऑफ होम साइंस, 7(2), पृष्ठ 564
- [3] ऐरी, पी, जैन, डी. (2010), प्री.स्कूलरों के वैचारिक कौशल पर माताओं की रोजगार स्थिति का प्रभाव, सामाजिक विज्ञान जर्नल, 24 (3), पृष्ठ 213
- [4] ऐरी, पी, जैन, डी. (2010), प्रीस्कूलरों के वैचारिक कौशल पर माताओं की रोजगार स्थिति का प्रभाव— जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज, 24(3), पीपी 213
- [5] साहनी, सी, टी. (2008), कामकाजी और गैर-कामकाजी माताओं के प्राथमिक स्कूल के बच्चों का शैक्षणिक प्रदर्शन— एडुट्रैक, 7 (5), पीपी 43
- [6] लिन, के. (2006), "माता-पिता की शिक्षा, वेतनभोगी काम में समय और बच्चों के साथ समय "ब्रिटिश जर्नल ऑफ सोशियोलॉजी 57(4) लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स एंड पॉलिटिकल साइंस पीपी 200
- [7] हंगल, एस, अमीना भावी, वी-ए (2007), स्व और अवधारणा, कार्यरत माताओं और किशोरों के किशोर बच्चों की भावनात्मक परिपक्वता और उपलब्धि प्रेरणा होममेकर्स— जर्नल ऑफ द इंडियन एकेडमी ऑफ एप्लाइड साइकोलॉजी, 33 पृष्ठ 103